श्री विष्णु भगवान की आरती

ओम जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट, दस जन्मों के संकट क्षण में दूर करे ।। ओम..

जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का, स्वामी दुःख...।
सुख सम्पत्ति घर आवे, सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का ।। ओम...

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी, स्वामी शरण...।
तुम बिन और ना दूजा, प्रभु बिन और न दूजा आस करूँ मैं जिसकी ।। ओम...

तुम पूरण परमात्मा तुम अंतर्यामी स्वामी तुम अंतर्यामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर, पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ओम...

तुम करूणा के सागर, तुम पालनकर्ता, स्वामी तुम पालन कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता ।। ओम...

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती, स्वामी सबके प्राणपती ।
किस विधि मिलु दयामय, किस विध मिलु दयालू, तुमको मैं कुमति ।। ओम...

दीनबंधु दुःख हर्ता, तुम रक्षक मेरे स्वामी तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओं, अपने शरण लगाओ द्वार पड़ा तेरे ।। ओम...

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ संतन की सेवा ।। ओम...

तन-मन-धन है तेरा, स्वामी सब कुछ है तेरा ।
तेरा तुझको अर्पण, तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा ।। ओम...

ओम जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट, दस जन्मों के संकट क्षण में दूर करे ।। ओम...